"नाम"

- सोइ सुणंदड़ी - मेरा तन मन मउला - नाम जपंदड़ी लाली । पंध जुलंदड़ी - मेरा अंदर ठंढा - गुर दरसन देख निहाली ।
- अखी बाझहु वेखणा - विण कंना सुनणा । पैरा बाझहु चलणा - विणु हथा करणा । जीभै बाझहु बोलणा - इउ जीवत मरणा । नानक हुकम पछाण के - तउ खसमै मिलणा ।
- नानक नाम जहाज है - चढ़े सो उतरे पार ।

• नानक नाम निधान है - गुरमुख पाइआ जाइ । मनमुख घर होदी वथ न जाणनी - अंधे भउक मुए बिललाइ ।

• नाम के धारे सगले जंत । नाम के धारे खंड ब्रहमंड । नाम के धारे सिम्रित-बेद-पुरान । नाम के धारे सुनन गिआन-धिआन । नाम के धारे आगास-पाताल । नाम के धारे सगल आकार । नाम के धारे पुरीआ सभ भवन । नाम के संग उधरे सुन स्रवन । कर किरपा जिस आपने नाम लाए । नानक चउथे पद मह - सो जन गत पाए ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

गुरू साहब बता रहे हैं कि नाम क्या है, हम किस नाम की पूजा कर रहे हैं "नाम के धारे सगले जंत । नाम के धारे खंड ब्रहमंड ।" नाम हमारे अंदर है और उस सच्चे नाम को जपना है और उसको सतिगुरू के बिना नहीं जपा जा सकता, सतिगुर परमेश्वर का रूप है । नाम ही जीवात्मा को चउरासी के बन्धनों से मुक्त कराके परमात्मा से मिलाने का एक मात्र साधन और मार्ग है । गुरूबाणी में परमात्मा के 1200 नाम दिये हैं, जीव जैसे भी और किसी भी नाम से परमात्मा का नाम ले सकता है नाम क्या है "अखी बाझहु वेखणा - विण कना सुनणा ।" आँखों के पीछे

ध्वनि और प्रकाश के रूप में प्राप्त होने वाली धुन नाम है, इसी नाम के द्वारा जीवात्मा भवसागर से पार उतर सकती है । आँखों और कानों के बिना धुन को सुना और प्रकाश को देखा जा सकता है, और उसे सुन लेने के बाद दुख पाप आदि सब कट जाते हैं अगर उस परमात्मा या सतिगुर के अन्दर दर्शन हो जाए तो जीव को क्या चाहिए, गुरू मिल गया तो सब कुछ मिल गया । आत्मा चाहती है कि उसका उस परमात्मा से मिलन हो जाए जिससे वह बिछुड़ कर आई है । गुरू साहब बता रहे हैं कि जीवात्मा नाम से जुड़ जाये "मन" सिमट जाए और मन विकारों को छोड़ कर गुरू की शरण में आ जाए और आत्मा का मिलाप परमात्मा से हो जाए । गुरू के हुक्म में आ जाने से जीवात्मा का उद्धार हो जाता है वह बाहर से अंदरूनी तौर पर सतिगुर के हुक्म में आ जाती है । गुरू साहब सचखण्ड से आते हैं उनके द्वारा किये गए वचन और शब्द पहली सीढ़ी हैं । गुरू के साथ दयाल की शक्ति है, गुरू के हुक्म में आने से सुरत सिमटना शुरू हो जाती है । गुरू के 1000 हुक्म हैं पर हम 999 भूल जाते हैं और एक वचन याद रखते हैं जिससे रूकावट आती है, गुरू साहब भजन के साथ-साथ जो वचन याद करते हैं उन्हें भी हमें याद रखना है, काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को छोड़ कर गुरू के साथ मिलना है गुरू का हो कर रहना है, गुरू साहब के आगे माथा टेकना है वाणी है गुरूओं के

मुख से निकली है, गुरू ही रोशन चिराग हैं, गुरू ही परमात्मा, पारब्रहम परमेश्वर है । गुरू साहब कहते हैं सच बोले बिना गुरू के अन्दर नहीं पहुँचा जा सकता । गुरू की बाणी सचखण्ड से आती है वह ही सच्ची बाणी है बाहर से निकल कर अन्दर जाना है । "नानक नाम जहाज है चढ़े सो उतरे पार ।" गुरू नानक साहब पूरे सतिगुरू थे वह अपने साथ लिस्ट ले कर आये थे कि किस-किस जीव को सचखण्ड ले जाना है और गुरू नानक साहब उन सबको अपने साथ सचखण्ड ले गये । गुरू नानक साहब ने उन सब जीवों को अपने साथ जोड़ा और उस अकाल पुरख के साथ उन जीवों का प्रेम पैदा किया जिसका कि वह रूप थे । गुरू नानक साहब ने इस दौरान कई कष्ट उठाये और उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा । उन्होनें जीवात्मा को नाम के साथ जोड़ा और आज काल नानक जी के नाम पर मत्थे टिका रहा है । आज किसी को भी पता नहीं गुरू का या उस शब्द का जिसने जीवात्मा को परमात्मा से मिलाना है । वह उस वक्त के गुरू थे आज के वक्त के पूर्ण गुरू का किसी को मालूम ही नहीं है । संत महात्मा सचखण्ड से आते हैं और अपना समय पूरा करके सचखण्ड वापस चले जाते हैं । ईसा मसीह आये और लोगों को हक का होका (नारा) दिया जीवों को सच पर चलने के लिए जोड़ दिया लेकिन लोगों ने उन्हें सूली पर चढ़ा दिया । यहाँ तक कि उन्हें

अपने लिए cross तक खुद उठा कर ले जाना पड़ा और उन्हें जिन्दा लटका दिया । गुरू अर्जन देव जी का भी यही हशर किया गया उन्हें जिन्दा आग पर बैठा दिया गया और वह बिल्कुल भी नहीं घबराए । संत महात्मा जब भी आये हक का होका (नारा) लगाया और क्रान्ति को जन्म दिया जिससे जीवात्मा अपने आपको पहचान सके । गुरु हर किशन साहब ने पाँच साल की उम्र में कुर्बानी दी लोगों की शिकायतों (तकलीफों) को दूर किया । गुरू गोबिंद सिंह जी ने 2 महीने तक कमरबंद नहीं खोला और अपने प्यारों के लिए लड़ते रहे, जो कि मानव जाति की रक्षा कर रहे थे उन्हानें मुसलमानों के खिलाफ आवाज उठाई ।

गुरू साहब कहते हैं कि परमात्मा किसी न किसी रूप में इस मृत्यलोक में हाजिर है किसी न किसी रूप में हजारों गद्धियाँ चल रही हैं इन्हीं रूपों में परमात्मा हमारे साथ है । गुरू साहब कहते हैं हमें उस गुरू को मानना है और गुरू द्वारा दिये हुऐ नाम का जाप करना है जो कि हमें उस परमात्मा से मिला सके उस धुन और प्रकाश को महसूस करवा सके । हमें उस नाम को जपने से क्या फायदा जो कि परमात्मा या गुरू का मेल न करा सके । पूर्ण गुरू ही बताता है कि किस तरह धुन को प्राप्त करना है ।

"इस देही को सिमरे देव ।"

गुरू साहब कहते हैं कि अन्दर की उस धुन को सुनना है और रोशनी को पाना है जिससे कि सतिगुर का दीदार हो सके । यह मनुष्य जन्म ले कर भी परमात्मा को प्राप्त न किया तो मनुष्य जन्म का क्या लाभ । हमें नौ द्वार खाली करके दसवें द्वार पहुँचना है और उस शब्द को सुनना है । शब्द क्या है - शब्द गुरू परमात्मा का रूप है । मनुष्य जीवन ही एक ऐसा जीवन है जिसे देवी देवता भी पाने के लिए तरसते हैं, वह भी चाह रखते हैं कि हमें भी यह देह मिले जिसमें परमात्मा खुद उपस्थित है, इस देह से उत्तम कोई और देह नहीं है ।

गुरू साहब कहते हैं कि परमात्मा ने ही देहधारी प्राणी इसलिए बनाया ताकि वह कर्मो को घटा बढ़ा सके और उस परमात्मा को प्राप्त करने की युक्ति समझ सके । सतिगुर के रास्ते पर चलना है हमें 25% का वह खेत बोना है जिसका फल सतिनाम की गोद में है । इस शब्द के जरिये सतिगुर हमें सचखण्ड ले जाऐगें । सतिगुर के बचनों पर चले बिना व नाम की कमाई किये बिना हम सचखण्ड नहीं पहुँच सकते । क्योंकि काल ने हमसे गलत कर्म करवाने हैं हमें अपने जाल से निकलने नहीं देना है, हमें छुटकारा तभी मिल सकता है जब हम अपने कर्मो की मैल उतार फेंकेगे तभी हम आवागमन से छुटकारा पा सकते हैं । गुरू साहब कहते हैं कि जीव नौ द्वारों में फँसा बैठा है वह परिवारिक

सम्बन्धों को छोड़ना ही नहीं चाहता, इनसे इसका पेट कभी भी नहीं भरता । जीव मनुष्य रूपी देह ले कर कर्म काटने आया है, हम पारिवारिक सम्बन्धों के कारण गलत कर्म करते हैं और फँसे बैठे हैं इन कर्म काण्डों से गुरू ही हमें निकाल सकता है । सतिगुर की रहमत हुई है यह मनुष्य रूपी जन्म मिला है इसको हमें समझना है गल्त रास्तों पर नहीं भटकना नहीं है । जीव जब मृतलोक में आता है तो माँ के पेट में उल्टा लटका होता है और वह हर वक्त परमात्मा से यही अरदास करता है कि अब मुझे इस नरक से निकाल दे मैं आठों पहर तेरा सिमरन करूँगा । लेकिन बाहर आने के बाद वह सब कुछ भूल जाता है और दुनिया की चमक दमक में खो जाता है ।

गुरू साहब कहते हैं कि जब जीव की मृत्यु आती है वह तो एक होनी घटना है जीव जितने सांस लेकर आया है उसने उतने ही सांस जीना है । वह तब भी उस परमात्मा की तरफ ध्यान नहीं लगा पाता क्योंकि उसका सारा जन्म व्यर्थ में ही चला गया । हमें गुरू के वचनों पर चलते हुऐ जीते जी मरना है अपने आप को सतिगुर पर कुर्बान करना है । जीव तूं सतिगुर वाला बन, वाणी को पहचान, नौ द्वारों को खाली करके दसवें द्वार पहुँच जा जहाँ परमात्मा का अखण्ड कीर्तन हो रहा है तूने वहाँ जा कर अपने प्रियतम से मुलाकात (मिलना) करनी है । उस द्वार पर

जाये बिना परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती । सतिगुर धुर-दरगाह से होका दे रहा है वह जीव को सचखण्ड ले जाने आया है तूं अपने आप को सतिगुर के हवाले कर दे ।